© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

अवध की बेगमात और स्थापत्य

डॉ आनन्द प्रकाश
असिस्टेण्ट प्रोफसर,इतिहास.
राजकीय पी0जी0 कालेज,
आलापुर,अम्बेडकर नगर,उत्तर प्रदेश

अवध उत्तर भारत का एक प्रमुख क्षेत्र था, जो वर्तमान भारत के उत्तर प्रदेश राज्यअवध उत्तर भारत का एक प्रमुख क्षेत्र था, जो वर्तमान भारत के उत्तर प्रदेश राज्यक्षेत्र से लगभग मिलता– जुलता है । भारतीय इतिहास में इसका प्राचीन काल से हीमहत्वपूर्ण स्थान रहा है । महाजनपद काल में अवध क्षेत्र कोशल प्रान्त के अन्तर्गतआता था औरअयोघ्या इसकी राजधानी थी।[1] वाल्मिकी रामायण के अनुसार मनु द्वारा इसकी स्थापना शुरू की गई तथा मनु के पुत्र इक्ष्वाकु द्वारा इसे पुरी तरह से बसाया गया था। [2] अवध वाल्मिकी रामायण महाकाव्य के नायक राम तथा बौद्ध धर्म के संस्थापक और प्रचारक महात्मा गौतम बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं से भी जुड़ा हुआ है।[3] प्राचीन काल के भारतीय इतिहास के महत्वपर्ण राजवंश जैसे– मौर्य, कुषाण, गुप्त, वर्धन, राजपूत आदि से सम्बद्ध होते हुए भी 11वी शताब्दी तक अवध का इतिहास अस्पष्ट दिखाई पड़ता है।[4]

12वीं शदी के आरम्भ से ही अवध का ऐतिहासिक उल्लेख प्राप्त होने लगता है । सल्तनत काल से लेकर मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर तक के साम्राज्य में अवध एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में विद्यमान रहा।लेकिन वास्तव में इसे एक अलग एवं महत्वपूर्ण सूबा का स्वरूप अकबर के शासन काल में ही प्राप्त हुआ जब अकबर ने 1580 ई0 में अपने साम्राज्य को सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित करने के लिए साम्राज्य को 12 सूवों में विभाजित किया, जिसमें अवध भी एक था । उसी समय से अवध एक अलग एवं महत्वपूर्ण सूबा के रूप में जाना जाने लगा।[5] अवध की महत्ता में बृद्धि की शुरूआत तब से प्रारम्भ हुई, जब मुगल बादशाह मुहम्मशाह ने सआदत खॉ को 1722 ई0 में यहाँ का सूवेदार नियुक्ति किया । मुगल साम्राज्य की पतनावस्था का लाभ उठाकर सआदत खाँ ने अवध में अपनी स्वत्रंत सत्ता की नींव डाली जो नाम मात्र के लिए मुगल बादशाह के अधीन थी। अवध में सआदत के द्वारा स्थापित साम्राज्य 1722 ई0 –1856 ई0 तक यानी लगभग 134 वर्ष तक उसके 11 उत्तराधिकारियों द्वारा शासित होता रहा । अवध के शासकों ने अठारहवीं सदी के मध्य से उन्नीसवीं सदी के मध्य तक अवध में एक ऐसी सभ्यता, संस्कृति को प्रोत्साहन एवं संरक्षण प्रदान किया, जिसे आज भी विश्व में नवाबी संस्कृति, अवधी संस्कृति,गंगा–जमुनी तहजीब तथा लखनवी तहजीब के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है इस नवाबी संस्कृति को परवान चढ़ाने एवं प्रसिद्धि दिलाने में अवध की बेगमों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[6]

अवध के शासकों ने अपने शासन काल में उच्च कोटि की धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष इमारतों का निर्माण कराया। धार्मिक इमारतों के अर्न्तगत मकबरा (कब्र) मस्जिद और इमामबाड़ा तथा धर्मनिरपेक्ष इमारतों के अर्न्तगत महल, बाग, दरवाजे आदि प्रकार की इमारतें बनी नवाबी युगीन अवध की स्थापत्य शैली की प्रमुख विशेषता भव्य इमारतें, वृक्षों

से आच्छादित मार्ग, बाग, उद्यान, शाहजहानी मेहराबें, शाहनशीन मेहराबदार हाल, दरवाजे, दालाने, हमाम खाना, भूल भुलैया, बारहदरी, सोने के पानी चढ़े छतरी नुमा गुम्मद है,जिसके निर्माण में मुख्यतः ईट, चूने, एवं गारे का प्रयोग किया गया था । अवध की इमारतें अपने अनोखेपन से चाहे कितनी ही बदनुमा क्यों न हो अपनी विशालता और अधिकता से अपनी महत्ता का वर्णन करती है ।[7]

अवध में निर्मित होने वाली अधिकांश इमारतों के निर्माण में अवध की बेगमात ने अपनी उत्कृष्ट भूमिका का निर्वाह किया । प्रायः वेगमों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी स्थापत्य के निर्माण में कारण या प्रेरक का कार्य किया । जिससे प्रायः उत्कृष्ट इमारतों का नामकरण उनके ही नाम पर हुआ है । स्थापत्य कला के प्रति अवध के नवाब ही नहीं रूचि रखते थे बल्कि अवध के बेगमों ने भी अपनी आय से महत्वपूर्ण इमारतों का निर्माण स्वयं कराया था । जो कि वास्तव में तत्कालीन समय में जब स्त्रियों की स्थापत्य कला के प्रति रूचि का विश्व के किसी भी देश में उदाहरण नही मिलता है । इस दृष्टिकोण से देखा जाय तो बेगमों ने इमारतों के निर्माण का कार्य सम्पादित करके एक अद्वितीय कार्य किया है । अवध की बेगमों द्वारा निर्मित इमारतों का विवरण अग्र वर्णित है –

नवाब सफदर जंग की पत्नी जिनका नाम सदरून्निशा था और जो नवाब सआदत खाँ की पुत्री थी । उन्हे नवाब सफदर जहॉबेगम का खिताब मिला था जो नवाब बेगम के नाम से प्रसिद्व थी । उन्होने फैजाबाद में मोती बाग के पीछे एक आलीशान इमामबाड़ा और मस्जिद का निर्माण 1764 ई0 में कराया था।[8] जो फैजाबाद नगर की उन्नति का प्रथम चरण माना जाता है ।

नवाब शुजाउद्दौला की पत्नी अमानत –उज –जुहरा जो मुगल बादशाह की मुॅह बोली बेटी थी उन्होंने अपने लिए फैजाबाद में एक भव्य मकबरे का निर्माण कराया था। जिस पर उन्हाने तीन लाख रूपया व्यय किया था। यह मकबरा स्थापत्य कला का एक महत्वपूर्ण नमूना था। बहू बेगम की मजार मकबरे के तहखाने में है और मकबरे के ऊपर एक भव्य इमामबाड़ा है ।[9]

नबाब शुजाउद्दौला की दूसरी पत्नी जो बहराइच के नजदीक वाली रियासत बौड़ी के रैकबर ठाकुरों की पुत्री थी जिसका वास्तविक नाम छत्तर कुअंर था । उन्हे अपने पुत्र सआदत अली खाँ के शासन काल में जनाबे आलिया का खिताब मिला था । उन्होने अलीगंज में हनुमान मंदिर का निर्माण कराया था।[10]

सआदत अली खाँ ने 1794–1795 ई0 में अपने पुत्र रफतउद्दौला का विवाह दिल्ली स्थित बेधशाला के प्रधान अधिकारी की पुत्री से कर दिया । जब रफतउद्दौला नबाव बने तो गाजी उद्दीन हैदर की उपाधि ग्रहण की और उसकी पत्नी को बादशाह बेगम का खिताब मिला । बादशाह बेगम ने अपने महल में बारहो इमाम की कब्रें बनवायी जिन्हे रौजा–ए दोवज्जा इमाम कहा जाता है । प्रत्येक रौजे (कब्र) के साथ एक छोटी मस्जिद भी बनी हुई थी।[11]

मुमताज महल सानी एक तेली व्यापारी उरई खानदान की लड़की थी। वादशाह गाजीउद्दीन हैदर ने इस लड़की को शिया बनाकर निकाह किया था। मुमताज महल सानी ने मुहल्ला चॉदी खाना में एक मस्जिद का निर्माण कराया था। जो आज भी विद्यमान है।[12]

दुलारी जो वास्तव में बनारस के कुर्मी परिवार से थी मगर कर्ज न अदा करने के कारण बेंच दी गई थी ।खरीदार ने उसे हुसैनी नाम दिया। हुसैनी को अवध की बेगम के वच्चे को दूध पिलाने के लिए रख लिया गया। नासीरूद्दीन उस पर आशक्त होकर निकाह कर लिया तथा शाहजाद महल का खिताब दिया। जब नासीरूद्दीन

अवध के वादशाह बने तो उन्हें मल्लिका जमानियॉ (उस जमाने की रानी) की उपाधि प्रदान की। सन् 1837 में मुहम्मद एहसान खॉ की निगरानी में उन्होंने लखनऊ में गोला गंज के निकट एक शानदार द्वार के साथ अपने नाम का इमामबाडा बनवाया था। अब यह भवन केवल खण्डहर मात्र शेष है। इमामबाड़े के साथ मस्जिद का भी निर्माण कराया गया था। जो आज भी मौजूद है।[13]

बादशाह नासिरूद्दीन हैदर की एक अन्य बेगम मुकददरे आलिया एक अंग्रेज सेना अधिकारी मिस्टर जार्ज होपकिन्स वाल्टर्स की पुत्री थी। जिसे मिस वाल्टर्स कहा जाता था। बादशाह की मृत्यु के बाद यह रेजीडेन्सी के प्रागंण में स्थित कोठी में रहने लगी। यहॉ पर बेगम की बनवाई हुई एक खुबसूरत मस्जिद व एक इमामबाड़ा है। इस मस्जिद और इमाम बाड़े की गुलबूटेकारी एक जमाने में देखने योग्य थी। आज भी यह इमारत टूटी–फूटी हालत में मौजूद है।[14]

नवाब बादशाह महल इनका मूल नाम हुसैनी था, जो जाति से डोमनी थी। बादशाह नासिरूददीन हैदर ने चुपचाप उससे शादी कर ली। लखनऊ के नवाबगंज मुहल्ले में बादशाह महल की बनवाई हुई ऊॅचे ओहदे पर एक बड़ी खूबसूरत मस्जिद आज भी मौजूद है। जनता उन्हें हुसैनी डोमनी के नाम से ज्यादा जानती थी ।इसलिए यह मस्जिद आज भी हुसैनी की मस्जिद ही कही जाती है।[15]

खास महल मलिका आफाक का वास्तविक नाम जहॉ आरा बेगम उर्फ खेतु बेगम था। अपने पति मुहम्मद अली शाह के शासन काल में राजनीति पर इनका प्रभाव बिलकुलनहीं था परन्तु अपने पुत्र अमजद अली शाह तथा पौत्र वाजिद अली शाह के शासन काल में उच्चपदाधिकारियों की नियुक्ति में इनकी सलाह मानी जाती थी। मक्का गंज मुहल्ले में मल्लिका आफाक नें एक कर्बला और एक छोटा इमामबाड़ा बनवाया था।[16]

मुहम्मद अली शाह की दुसरी प्रसिद्ध बेगम मल्लिकाजहॉ बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी ।इसलिए उसने अपनी कुल आय का अधिकतम उपयोग मजहबी इमारतों के बनवानें में या तीर्थ यात्रा में किया। मुहम्मद अलीशाह मृत्यु के समय जामा मस्जिद तथा सतखण्डा पैलेस अधूरी हालात में थी। अवध की नवाबी का यह दस्तूर था कि मरने वाले की अधूरी छोड़ी हुई इमारतों को कोई हाथ नहीं लगाता था। लेकिन खुदा का घर होने का कारण जामा मस्जिद को पूरा करवाना मल्लिका जहॉ ने अपना पहला फर्ज समझा। उन्होनें तमाम दौलत लगाकर जामा मस्जिद की इमारत को उसी भाव से पूरी किया जैसी बादशाह की इच्छा थी ।

जामा मस्जिद के अलावा मल्लिका जहॉ नें ऐश बाग लखनऊ में एक मशहूर कर्बला का निर्माण किया आज भी मलिका जहॉ की कर्बला शियों का प्रसिद्ध कब्रिस्तान है।[17] इसके साथ ही मल्लिका जहॉ ने एक इमामबाड़े का निर्माण प्रारम्भ कराया लेकिन उसे पूरा कराने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई ।[18]

अमजद अली शाह की खास महल ताजआरा बेगम कालपी के नवाब हसीमुद्दीन खॉ की बेटी थी और मलिका किश्वर उनका खिताब था। अपने पुत्र वाजिद अली शाह के शासन काल में उन्हें मरियम मकानी (विश्वमाता) का रूतबा प्रदान किया गया। मलिका के नाम से सआदत गंज वार्ड लखनऊ में लकड़मण्डी के करीब किश्वर गंज मुहल्ला आज भी आबाद है। हजरतगंज सिल्तैनाबाद के पीछे जनाब गंज उनके द्वारा आबाद किया गया था। कश्मीरी मुहल्ले के सिरे पर उनकी बनवाई हुई मस्जिद मलिका किश्वर अभी भी बाकी है।[19]

इस प्रकार हम देखते है कि अवध की बेगमात ने उत्कृष्ट स्थापत्य के निर्माण में अपनी सराहनीय योगदान दिया है। सामान्यतया बेगमों ने धार्मिक इमारतों के निमार्ण का कार्य किया। उनकी स्थापत्य के प्रति रूचि का परिणाम रहा कि अवध के शासकों ने भी इतिहास प्रसिद्ध इमारतों का निर्माण कराया ।

संदर्भ सूची

(1) डॉ0 भरत सिंह उपाध्याय– बुद्ध कालीन भारतीय भूगोल, पृष्ठ 236.

(2) ब्रज किशोर मिश्र – अवध के प्रमुख कवि, लखनऊ ,1960,पृष्ठ 2.

(3) डॉ0 शशि – अवधी में क्रिया पढ़ रचना वाराणसी 1994, पृष्ठ 1.

(4) डब्ल्यू0 सी0 बेनेट – अवध गजेटियर भाग–1 इलाहाबाद,1877–78, पृष्ठ 458.

(5) ईश्वरी प्रसाद – ए शार्ट हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया, इलाहाबाद, 1975,पृष्ठ–79

(6) योगेश प्रवीन – ताजदारें अवध, लखनऊ, पृष्ठ –175

(7) एच0 जी0 कीन – हैण्ड बुक फार विजिटर्स टू इलाहाबाद, कानपुर एण्ड आगरा, पृष्ठ 75–76

(8) मुंशी फैज वख्श – तारीख–ए–फतह वख्श पृष्ठ–346

(9) डब्ल्यू0 सी0 वेनेट – अवध गजेटियर, भाग–2 पृष्ठ–364

(10) रेहाना बेगम – अवध का सामाजिक जीवन, 1994, पृष्ठ 225

(11) योगेश प्रवीन – ताजदारे अवध, लखनऊ, पृष्ठ–96

(12) वही – पृष्ठ 100.

(13) वही – पृष्ठ 119

(14) वही – पृष्ठ 121.

(15) वही – पृष्ठ 125.

(16) वही – पृष्ठ 145.

(17) वही – पृष्ठ 145–146

(18) मधु त्रिवेदी – दी मेकिंग आफ दी अवध कल्चर,2010, पृष्ठ 185

(19) योगेश प्रवीन – ताजदारे अवध, लखनऊ, पृष्ठ 149–150.